Dg – टोरा का समापन मत्ती ५:१७-२० और लूका १६:१७ | 1

– Save This Page as a PDF–

टोरा का समापन

मत्ती ५:१७-२० और लूका १६:१७

नई वाचा में विश्वासियों को टोरा से भी प्यार करना चाहिए। शवु’ओट के त्योहार पर लगभग तीन हजार लोग बचाए गए थे (प्रेरितों २:४१)। हालाँकि, कई वर्षों के बाद, हजारों विश्वासी अभी भी टोरा के प्रति उत्साही थे (प्रेरितों २१:२० सीजेबी)। परिणामस्वरूप, टोरा केवल तानाख के धर्मी लोगों के लिए नहीं है, बल्कि सभी विश्वासियों के लिए है। रब्बी शाऊल हमें सिखाता है कि टोरा पवित्र है (रोमियों ७:१२), परिपूर्ण है, और स्वतंत्रता देता है, बशर्ते कोई इसका उपयोग टोरा के इच्छित तरीके से करे (प्रथम तीमुथियुस १:८; जेम्स १:२५ सीजेबी)।

मसीहा एक आदर्श शिष्य, आदर्श पुत्र है जिसने पूरी तरह से पिता की इच्छा का पालन करके सभी धार्मिकता को पूरा किया (मत्ती ४:४ और १०)। वही आज्ञाकारिता आज विश्वासियों की विशेषता होनी चाहिए। एक शिष्य के जीवन में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता एक प्राथमिकता होनी थी (मत्ती ६:३३), और परमपिता परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण लक्ष्य था (मत्ती ५:४८)। इस प्रकार, परमपिता परमेश्वर और उनकी आज्ञाओं के प्रति यही धार्मिकता और निष्ठा यहाँ मसीह के शब्दों में देखी जाती है। मत्ती ५:१७-२० न केवल टोरा की वास्तविक प्रकृति के बारे में बात करता है, बल्कि हा-मेशियाच के साथ इसके संबंध के बारे में भी बताता है।

पर्वत पर उपदेश का हृदय तब था जब प्रभु ने कहा:
यह मत सोचो कि मैं टोरा या पैगम्बरों को समाप्त करने आया हूँ। मैं मिटाने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं (मत्ती ५:१७)। इन शब्दों को उनके संदर्भ में समझा जाना चाहिए। येशुआ आज भी जीवित है और टोरा अभी भी प्रभावी है, मोक्ष के लिए नहीं – बल्कि ईश्वरीय जीवन के लिए। टोरा की व्यवस्था मसीहा के आगमन के साथ समाप्त नहीं हुई, यह उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हुई। उनकी मृत्यु तक, सभी ६१३ आज्ञाएँ

Dg – टोरा का समापन मत्ती ५:१७-२० और लूका १६:१७ | 2

अनिवार्य थीं। फरीसी यहूदी धर्म (जो यह उपदेश दिया गया था) के संदर्भ में, यीशु जो बात कह रहे थे वह यह है कि जबकि फरीसियों ने मौखिक ब्यबस्था के साथ इसकी पुनर्व्याख्या करके तोरा को नष्ट कर दिया था (Ei – मौखिक कानून देखें), आने में उनका उद्देश्य जैसा कि लिखा गया था, केवल टोरा को पूरा करना था।

ये छंद हमें येशुआ की टोरा की व्याख्या का आलोचनात्मक स्पष्टीकरण देते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं, उनके प्रारंभिक मंत्रालय का मजबूत संदेश कुछ लोगों को उनके अंतिम उद्देश्य पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करेगा। उन्हें पहले से ही पता था कि कुछ, विशेष रूप से रब्बी, उनके संदेश को यहूदी धर्म, या यहां तक कि तानाख के लिए एक धार्मिक खतरे के रूप में देख रहे थे। नतीजतन, जैसे ही मसीहा ने टोरा की अपनी व्याख्या का खुलासा किया, उसे इज़राइल को दिए गए पहले के रहस्योद्घाटन के संबंध में अपनी स्थिति स्पष्ट करने की आवश्यकता महसूस हुई।

अपने स्वयं के शब्दों के अनुसार, यीशु अपने लोगों के लिए कोई नई शिक्षा या नया टोरा लाने नहीं आए थे। दुर्भाग्य से, कुछ ईसाई धर्मशास्त्रियों और धर्मशास्त्रियों ने टोरा का अवमूल्यन करने की प्रवृत्ति दिखाई है। इन छंदों के प्रकाश में, मुझे यकीन है कि इससे ईश्वर का दिल दुखी होगा। हालाँकि इसका उपयोग उचित तरीके से किया जाना चाहिए, एक बार जब हम समझ जाते हैं कि प्रभु टोरा को खत्म करने के लिए नहीं, बल्कि इसे पूरा करने के लिए आए हैं, तो टोरा के बारे में हमारा दृष्टिकोण और भी सुंदर हो जाता है जब हम मसीहा में चित्र का पूरा होना पाते हैं। .

मानो इस शिक्षण के महत्व पर जोर देने के लिए, येशुआ इसे और भी विस्तार से बताता है। हाँ, वास्तव में! मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक स्वर्ग और पृथ्वी टल नहीं जाते, तब तक टोरा से एक युद या एक स्ट्रोक भी नहीं टलेगा – तब तक नहीं जब तक कि जो कुछ होना चाहिए वह घटित न हो जाए (मत्ती ५:१८; लूका १६:१७ सीजेबी)। युद हिब्रू एलेफ़-बेट में सबसे छोटा अक्षर है, और स्ट्रोक हिब्रू अक्षरों के शीर्ष पर छोटे कलात्मक निशान को संदर्भित करता है। हिब्रू में, एक स्ट्रोक (हिब्रू टैग) का अंतर एक शब्द के पूरे अर्थ को बदल सकता है, उदाहरण के लिए व्यवस्थाविवरण ६:४ में एक दलित या एक रेश के मामले में। यह कहकर, यीशु ने अपने श्रोताओं को याद दिलाया कि टोरा के न तो सबसे छोटे अक्षर और न ही अक्षर के सबसे छोटे हिस्से को कभी भी ख़त्म किया जाएगा। यहां तक कि ६१३ आज्ञाओं में से सबसे छोटी, प्रतीत होने वाली महत्वहीन आज्ञाओं को भी पूर्ण धार्मिकता (मुक्ति नहीं) के लिए रखा जाना चाहिए। वह टोरा के प्रति अपने सम्मान पर अधिक मजबूत शब्दों में जोर नहीं दे सकता था।

रब्बी सिखाते हैं कि जब परमेश्वर ने इज़राइल को टोरा दिया, तो उसने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आज्ञाएँ डालीं और आदेश दिया, कहा: राजा को अपने लिए बड़ी संख्या में घोड़े नहीं खरीदने चाहिए। . . न वह बहुत पत्नियाँ ब्याहेगा, न उसका मन भटकेगा। उसे बड़ी मात्रा में चाँदी और सोना जमा नहीं करना चाहिए (व्यवस्थाविवरण १७:१६-१७)। परन्तु सुलैमान ने उठकर परमेश्वर की आज्ञा का कारण जान लिया, और कहा,

Dg – टोरा का समापन मत्ती ५:१७-२० और लूका १६:१७ | 3

यहोवा ने यह आज्ञा क्यों दी? खैर, मैं बहुत से घोड़े खरीदूंगा, बहुत सी पत्नियां रखूंगा, फिर भी मेरा दिल नहीं भटकेगा। चूँकि परमेश्वर ने उसे एक बुद्धिमान और समझदार हृदय दिया था (प्रथम राजा ३:१२), सुलैमान ने सोचा कि वह जितनी चाहे उतनी पत्नियों से विवाह कर सकता है।

उस समय युद, हिब्रू वाक्यांश यारबेह (जिसका अर्थ है कि राजा को बहुत अधिक पत्नियाँ नहीं रखनी चाहिए) का पहला अक्षर, ऊंचे स्थान पर गया और परमेश्वर के सामने झुक गया और कहा, “ब्रह्मांड के स्वामी! क्या आपने यह नहीं कहा कि टोरा से कोई भी पत्र कभी भी समाप्त नहीं किया जाएगा? देखो, अब सुलैमान ने उठकर एक को मिटा दिया है। कौन जानता है? आज एक, कल दूसरा, जब तक कि पूरा टोरा रद्द नहीं कर दिया जाएगा।” और परमेश्वर ने यह कहकर उत्तर दिया, “सुलैमान और उसके समान हज़ार लोग मर जाएँगे, परन्तु तेरी ओर से छोटी से छोटी चिट्ठी भी रद्द न की जाएगी।”

इसलिए, यह देखना दिलचस्प है कि मसीहा इस शिक्षा से सहमत थे, और विश्वासियों के रूप में, हमें ईश्वर और उनके सभी आदेशों का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि जैसा मसीह ने कहा: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो जो मैं आज्ञा देता हूं उसका पालन करोगे (यूहन्ना १४:१५)।

वह यह चेतावनी देकर टोरा की प्रासंगिकता को बरकरार रखता है कि जो कोई भी आज्ञाओं की थोड़ी सी भी अवज्ञा करेगा और दूसरों को ऐसा करना सिखाएगा, उसे स्वर्ग के राज्य में सबसे कम बुलाया जाएगा। परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और दूसरों को ऐसा करना सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा (मत्ती ५:१९ सीजेबी)। भारी और हल्की आज्ञाओं की अवधारणा टोरा की रब्बी समझ में एक सामान्य विषय है। उदाहरण के लिए, एक हल्की आज्ञा प्रकृति में एक मातृ पक्षी को मुक्त करना होगा, जबकि एक भारी आज्ञा अपने माता-पिता का सम्मान करना होगा (ट्रैक्टेट किद्दुशिन ६१बी)।

चूँकि यहूदी लोग पूछ रहे थे, “क्या फरीसियों की धार्मिकता राज्य में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त है?” पहाड़ी उपदेश में सबसे महत्वपूर्ण कथन वह है जब यीशु ने कहा था: क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम्हारी धार्मिकता टोरा- शिक्षकों और फरीसियों से कहीं अधिक नहीं होगी, तुम निश्चित रूप से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे (मत्ती ५: २० सीजेबी)। यहां कहीं अधिक शब्द का सबसे अच्छा अनुवाद सीमा से अधिक के रूप में किया जा सकता है। अपने किनारों पर बहने वाली नदी की तरह, यह कुछ ऐसा है जो मानक से कहीं अधिक है। इस संदर्भ में, यीशु हमें सिखा रहे हैं कि जिस धार्मिकता की उन्हें आवश्यकता है वह वास्तविक पवित्रता में से एक है, जो उनके समय के फरीसियों और सदूकियों और सामान्य रूप से दुनिया के पाखंडी मानकों से कहीं अधिक है।

ये उनके दिल में छुरी थी. उन्होंने मन में सोचा, “मैं यह कैसे कर सकता हूँ? मैं

Dg – टोरा का समापन मत्ती ५:१७-२० और लूका १६:१७ | 4

नहीं कर सकता!” मुद्दा यह था – उन्हें इसे अपने आप करने में सक्षम नहीं होना चाहिए था। यही कारण है कि रब्बी शाऊल हमें बताता है कि मसीहा के आने तक टोरा एक संरक्षक के रूप में कार्य करता था, ताकि हमें भरोसा करने और वफादार होने के आधार पर धर्मी घोषित किया जा सके। परन्तु अब जब इस भरोसेमंद विश्वासयोग्यता का समय आ गया है, तो हम अब किसी संरक्षक के अधीन नहीं हैं (गलातियों ३:२४)। जब यहूदियों ने देखा कि पूर्ण धार्मिकता मानवीय रूप से असंभव है, तो उन्हें यीशु की ओर मुड़ना चाहिए था, जिन्होंने केवल विश्वास के माध्यम से अनुग्रह प्रदान किया (इफिसियों २:८)। लेकिन फरीसियों ने मौखिक ब्यबस्था (ईआई – मौखिक ब्यबस्था देखें) के साथ ईश्वर के उच्च, आदर्श मानक को गटर में फेंक दिया था, कुछ ऐसा जो उन्होंने सोचा था कि वे कर सकते थे! उन्होंने परमेश्वर के असंभव मानक को बहुत प्राप्य बना दिया, और इस प्रक्रिया में, पापियों के उद्धारकर्ता की आवश्यकता को समाप्त कर दिया।

वास्तव में, प्रभु को न केवल वास्तविक पवित्रता की आवश्यकता है, बल्कि उन्हें पूर्ण धार्मिकता की भी आवश्यकता है। परमेश्वर के राज्य के लिए योग्य होने के लिए हमें स्वयं राजा के समान पवित्र होना चाहिए। लेकिन निःसंदेह, यह एक ऐसा मानक है जिसे हम अपने प्रयासों से कभी प्राप्त नहीं कर सकते। हम अपनी पापपूर्णता में आत्मिक रूप से मर चुके हैं (रोमियों ३:२३)। लेकिन जैसा कि रब्बी शाऊल कहते थे: उन्होंने हमें बचाया। . . हमारे द्वारा किए गए किसी धर्मी कर्म के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी अपनी दया के आधार पर (तीतुस ३:५ सीजेबी)। जब हम उस पर भरोसा/विश्वास/विश्वास करते हैं, तो उसकी सारी धार्मिकता हमारे खाते में स्थानांतरित हो जाती है। इस परिच्छेद में ईसा मसीह यहां जो कह रहे हैं, वह यह है कि इस प्रक्रिया में टोरा को समाप्त नहीं किया गया है – बल्कि पूरा किया गया है। सच्चे आस्तिक का सच्चा मार्ग, हमारे उद्धार के लिए नहीं, बल्कि जीने के लिए एक खाका के रूप में, परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के माध्यम से प्रदर्शित होता है (निर्गमन Dh – दस शब्द पर टिप्पणी देखें)।

आज मसीहाई आराधनालयों में टोरा जुलूस के दौरान, मसीहा में विश्वास करने वाले लोग अपनी बाइबिल को चूमते हैं और फिर टोरा के गुजरते समय उसे छूते हैं। उनका मानना है कि टोरा हमें मेशियाच की ओर इशारा करता है, और ईश्वर की पवित्रता और पवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रथा भजन संहिता से ली गई है, जहां रुआच हाकोडेश हमें पुत्र को चूमने का निर्देश देता है (भजन २:१२)।

इसलिए, मसीह, परमपिता परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की आदर्श अभिव्यक्ति के रूप में, टोरा या पैगम्बरों को समाप्त करने के लिए नहीं आए, बल्कि उन्होंने हमें अपनी आज्ञाओं के पालन में जीवन जीने के लिए बुलाकर टोरा के बारे में हमारी समझ को पूरा किया। हम अपने आध्यात्मिक उद्धार के लिए मसीह के रक्त पर भरोसा करते हुए, एक मार्गदर्शक के रूप में टोरा के विशेष स्थान की सराहना कर सकते हैं। अंततः, यहूदी या अन्यजाति दोनों के लिए येशुआ बेन डेविड ही एकमात्र आशा हैं।